सरकारें प्रस्थापित हो गयीं। जनसंघ इन सभी राज्यों में सत्ता का भागीदार बन, परन्तु विरोधी पार्टियों के आपसी मतवैभिन्य तथा काम करने के तरीकों के अन्तर के कारण यह खिचड़ी सरकारें अधिक न चल सकीं और दो वर्ष के अन्दर-अन्दर एक के बाद एक ये सभी सरकारें धराशायी हो गयीं। ये सरकारें भी भानमती का अजीब पिटारा थीं, जिनमें दो परस्पर विरोधी ध्रुब कम्युनिस्ट और जनसंघ एक साथ शामिल थे। इन संविद सरकारों का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि जनता को पहली बार यह विश्वास हुआ कि कांग्रेस पार्टी को भी सत्ता से हटाया जा सकता है। इस मायने में यह प्रयोग सफल और अभिनव ही कहा जाएगा। इस खिचड़ी को पकाने की सफलता का श्रेय भी बहुत कुछ पण्डित जी को जाता है। उनका कहना था, ''पहले इस महाशत्रु को मार दो, बाद में आपस में एक दूसरे को समझ लेंगे।''

जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष

1968 में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए और कालीकत में जनसंघ का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। इस समय केरल में कम्युनिस्ट नेता, श्री नम्बूदरीपाद मुख्यमंत्री थे।

कम्युनिस्टों के गढ़ को तोड़ने का पण्डित जी का यह प्रयास था। पण्डित जी की अध्यक्षता का समाचार देश के कोने-कोने में जंगल की आग की तरह फैल गया और कार्यकर्ता खुशी से झूम उठे। उनके मन कालीकत पहुंचने के लिए उतावले हो उठे। देश के कोन-कोने से अनेक प्रतिबन्ध लगाए जाने पर भी बीस हजार कार्यकर्ता बसों, ट्रकों और रेलों से कालीकत जैसे सुदूर स्थान पर जा पहुँचे। कम्युनिस्ट सरकार ने, मान्य राजनीतिक परम्पराओं के विरूद्ध, सहयोग के स्थान पर सब प्रकार के रोड़े अटकाये। न रहने को प्रर्याप्त जगह थी और न खाने के लिए भोजन। लोग अपनी बसों की छतों एवं सड़कों के किनारे रात में सो जाते थे और अधिकांश लोगों ने बाजार में मिलने वाली काफी, पकौड़ी और केलों पर ही तीन दिन व्यतीत कर दिए। शोभा यात्रा तो अभूतपूर्व थी, मानों सारा केरल उमड़कर सड़कों पर आ गया हो। मीलों लम्बा जुलूस, नाचते-गाते लोग-आदिवासियों से लेकर बड़े-बड़े महलों में रहने वाले नागरिक, अपार जनसमूह, केसरिया झण्डों से आच्छादित सड़कें, महल और अटारी देखकर उस दिन कालीकत केसरिया रंग में नहा रहा हो, ऐसा अभूतपूर्व दृश्य था। ऐसा कोई भी लोकवाद्य और आदिवासी कबीला नहीं बचा, जो उस जुलूस में उपस्थित न हो। अलग-अलग भाषा, अलग-अलग नारे एक दूसरे की भाषा समझते नहीं पर सब नाच गा रहे थे। हर्षविभोर थे। शाम को एक विशाल मैदान में सार्वजनिक सभा हुई। भीड़ इतनी थी कि तिल रखने